हफ़्तावार रिसाला : 415
Weekly Booklet : 415

Tafseer e Noorul Irfan Se 95 Madani Phool (Qist - 6) (Hindi)

“तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान”

से 95 मदनी फूल (क़िस्त : 6)

सफ़हात : 17

पहले साहिबे किताब नबी कौन ? 02
हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) हर मोमिन के जान व माल के मालिक हैं 05
जन्नत में कोई इबादत न होगी मगर... 10
जन्नत में ग़िज़ा न दी जाएगी बल्कि... 12

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

"तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान" से 95 मदनी फूल (क़िस्त : 6)

दुआए अत्तार : या **अल्लाह** पाक ! जो कोई 17 सफ़हात का रिसाला "तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान" से 95 मदनी फूल (क़िस्त : 6) पढ़ या सुन ले उसे क़ुरआने करीम की तालीमात पर अमल की तौफ़ीक़ दे और उस को मां बाप और ख़ानदान समेत जन्नतुल फ़िरदौस में बे हिसाब दाख़िला नसीब फ़रमा ।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

सदक़े का क़ाइम मक़ाम दुरूदे पाक

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस मुसलमान के पास सदक़ा करने को कुछ न हो उसे चाहिये कि अपनी दुआ में ये कलिमात कह लिया करे :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ وَصَلِّ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** ! अपने बन्दे और रसूल ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर रह़मत नाज़िल फ़रमा । मोमिनीन व मोमिनात और मुसलमान मर्दों और औरतों पर रह़मत नाज़िल फ़रमा । क्यूंकि येह ज़कात है और मोमिन कभी ख़ैर (भलाई) से शिकम सैर नहीं होता यहां तक कि जन्नत उस का ठिकाना होती है ।

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، 2/130، حدیث:900)

शर्ह़े ह़दीस : जो शख़्स सदक़ा करने पर क़ुदरत नहीं रखता उस का **अल्लाह** पाक से ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये रह़मत की दुआ करना यानी दुरूदे पाक भेजना उस के लिये सदक़ा है । (السراج المنیر بشرح جامع الصغیر، 2/232)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

“सूरतुस्सजदह” से ह़ासिल होने वाली 6 ख़ूबसूरत बातें

﴾1﴿ अगर्चे आंख, कान दिल जानवरों को भी अ़ता हुए मगर इन्सान के येह आज़ा बहुत अशरफ़ हैं क्यूंकि इन्सान आंख, कान से आयाते इलाहिय्या, देखता सुनता है और उस का दिल यार की तजल्ली गाह (यानी ज़ियारत का मक़ाम) है जिस से वोह तमाम मख़्लूक़ से अशरफ़ है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 826)

﴾2﴿ क़ियामत में बारगाहे इलाही में सब ही सर झुकाए होंगे मगर काफ़िर शर्मो नदामत की वज्ह से और मोमिन मुत्तक़ी दरबार के अदब से।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 500)

﴾3﴿ जो नबी को (مَعَاذَاللّٰہ तौहीन के त़ौर पर) आम इन्सानों के बराबर माने वोह काफ़िर है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 827)

﴾4﴿ फ़िस्क़ के माना हैं ह़द से निकल जाना, गुनाहगार मोमिन तक़्वा की ह़द से, काफ़िर ईमान की ह़द से बल्कि हु़ज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का गुस्ताख़ इन्सानिय्यत की ह़द से ख़ारिज है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 501)

﴾5﴿ दोज़ख़ी भड़कते हुए शोलों में इतना उछलेंगे कि दोज़ख़ के मुंह पर आ जाएंगे क़रीब होगा कि तड़प कर बाहर निकल पड़ें कि फ़रिश्ते उन के जिस्मों पर गुर्ज़ मार कर फिर नीचे गिरा देंगे। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 501)

﴾6﴿ पहले साहिबे किताब नबी मूसा عَلَيْهِ السَّلَام हैं, आप से पहले पैग़म्बरों को सहीफ़े (यानी रिसाले) मिले थे। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 501)

“सूरतुल अह़ज़ाब” से ह़ासिल होने वाली 34 ख़ूबसूरत बातें

﴾1﴿ रब तआला की बारगाह में हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इज़्ज़त तमाम रसूलों से ज़ियादा है कि और अम्बियाए किराम को उन के नाम शरीफ़ से पुकारा मगर हमारे हु़ज़ूर को लक़ब शरीफ़ से। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 502)

«2» हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सारे इल्हाम वहि़ये इलाही हैं, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हर काम वह़ी की इत्तिबाअ है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 502)

«3» किसी को बाप भाई या बेटा कह देने से वाक़ेअ (यानी ह़क़ीक़त) में वोह बाप बेटे नहीं बन जाते, न उन की बीवियां ह़राम हों न उन की माएं ह़लाल हों और न उन्हें मीरास मिले। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 827)

«4» ईसा عَلَیۡہِ السَّلَام के बाप न थे वरना उन्हें ईसा इब्ने मरयम न कहा जाता, मरयम उन की मां हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 827)

«5» हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हर मोमिन के दिल में ह़ाज़िर व नाज़िर हैं कि जान से ज़ियादा क़रीब हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 503)

«6» हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हुक्म, हर मोमिन पर, बादशाह, मां बाप से ज़ियादा नाफ़िज़ है कि हुज़ूर हमारे सब से ज़ियादा मालिक हैं।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 503)

«7» नबी हमारे भाई नहीं क्यूंकि भाई की बीवी भावज होती है मां नहीं होती बल्कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वालिद हैं और मुसलमान एक दूसरे के भाई और वोही अज़्वाज मोमिनों की वालिदा हैं जो क़ुर्बत शरीफ़ से फ़ैज़याब हो गईं ख़्वाह बीवी हों या लौंडी जो सिर्फ़ निकाह़ में आ कर अलाह़दा हो गईं जैसे उमैमा, जौनिया वोह मां नहीं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 503)

«8» हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की अज़्वाज का मुसलमानों की माएं होना दो हुक्मों में है : इन्तिहाई अदबो ताज़ीम और उन से निकाह़ ह़राम होना।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 503)

«9» हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) से किसी चीज़ का अहद करना गोया रब से अहद करना है क्यूंकि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रब तआला के नाइबे आज़म और मुख़्तारे

मुत्लक़ हैं। इसी त़रह अपने शैख़ से अहद गोया हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) से अहद है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 827)

﴾10﴿ मोमिन की शान येह है कि कलाम कम करे काम ज़ियादा करे। इसी लिये रब ने बोलने के लिये ज़बान एक और दीगर काम करने के लिये आज़ा दो दो दिये हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 505)

﴾11﴿ हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की ज़िन्दगी शरीफ़ सारे इन्सानों के लिये (मुकम्मल त़ौर पर) नमूना (Role Model) है जिस में ज़िन्दगी का कोई शोबा बाक़ी नहीं रहता, कामयाब ज़िन्दगी वोही है जो हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के नक़्शे क़दम पर हो, अगर हमारा जीना मरना सोना जागना हुज़ूर के नक़्शे क़दम पर हो जाए तो येह सारे काम इबादत बन जाएं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 828)

﴾12﴿ उलमा फ़रमाते हैं : जिस मोमिन में येह तीन वस्फ़ जम्अ हो जाएं : ﴾1﴿ हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की इत्तिबाअ ﴾2﴿ **अल्लाह** से उम्मीद और ﴾3﴿ रब का ज़िक्रे कसीर वोह दुन्या व आख़िरत में ऐश में रहे क्यूंकि उसे मुसीबत में सब्र और राहत में शुक्र नसीब होता है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 828)

﴾13﴿ काफ़िरों के दिल में मोमिन के ईमान का क़ुदरती रोब होता है, जिस क़दर क़ुव्वते ईमानी ज़ियादा इतना ही रोब ज़ियादा बल्कि बाज़ मोमिनों का रोब जानवरों के दिल में भी था। (सहाबिये रसूल) ह़ज़रते सफ़ीना (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) के सामने शेर दुम हिलाता हुवा वोह कुत्ते की त़रह आया। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 828)

﴾14﴿ बड़े मरतबे वालों की जुर्म पर सज़ा ज़ियादा होती है क्यूंकि उन पर रब का एह़सान ज़ियादा है लिहाज़ा उलमा व सादाते किराम को बुरे आमाल से बहुत बचना चाहिये। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 829)

﴾15﴿ जब हुज़ूर (صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم) की अज़्वाज की मिस्ल आलम (दुन्या) में कोई औरत नहीं तो ख़ुद हुज़ूर (صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم) की मिस्ल भी कोई नहीं हो सकता। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 507)

﴾16﴿ हुज़ूर (صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم) की अज़्वाज व औलाद गुनाहों से पाक हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 829)

﴾17﴿ हुज़ूर (صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم) के हुक्म के सामने अपने ज़ाती मुआमलात में भी मोमिन को ह़क़ नहीं होता। अगर ह़ुज़ूर (صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم) किसी पर उस की मन्कूह़ा बीवी ह़राम कर दें तो ह़राम हो जाए जैसे ह़ज़रते कअब (رَضِیَ اللہُ عَنْہ) के लिये हुवा। ग़रज़ येह कि हुज़ूर (صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم) हमारे दीन के मालिक हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 508)

﴾18﴿ हुज़ूर (صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم) हर मोमिन के जानो माल के मालिक हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 508)

﴾19﴿ हुज़ूर (صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم) का हुक्म मां बाप के हुक्म से ज़ियादा अहम है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 508)

﴾20﴿ त़ाने से बचना और अपनी इज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त की कोशिश करना सुन्नते रसूल है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 829)

﴾21﴿ हुज़ूर (صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم) के एक हज़ार नाम हैं जिन में से मुह़म्मद, अह़मद ज़ाती नाम बाक़ी सिफ़ाती नाम। लफ़्ज़ मुह़म्मद तादाद व हुरूफ़ और बे नुक़्ता होने में **अल्लाह** के नाम से बहुत मुनासिब है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 509)

﴾22﴿ (हुज़ूर (صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم) को) मह़बूब बना कर भेजा कि तुम तमाम मख़्लूक़ के मह़बूब हो और दाइमी (हमेशा से हमेशा के लिये) मह़बूब हो इस लिये

आप के फ़िराक़ में लकड़ियां, ऊंट रोए और आज बग़ैर देखे करोड़ों आशिक़ मौजूद हैं और रहेंगे। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 829)

﴾23﴿ सारे नबी **अल्लाह** के गवाह भी थे और उस की रहमतों के बशीर (यानी ख़ुश ख़बरी सुनाने वाले) भी उस के अज़ाबों के नज़ीर (यानी डर सुनाने वाले) भी मगर उन की गवाही बिशारत वग़ैरा सुन कर थी हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के येह औसाफ़ देख कर कि हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने जन्नत और दोज़ख़ को आंखों से देखा और गवाही दी और ऐनी (यानी आंखों देखी) गवाही पर तमाम समई (यानी सिर्फ़ सुनी हुई) गवाहियों की तक्मील हो जाती है कि फिर किसी गवाही की ज़रूरत नहीं रहती इस लिये हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं और आप की गवाही आख़िरी गवाही। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 829)

﴾24﴿ हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के चचा बारह हैं और फूफियां छे हैं जिन में हज़रते अब्बास व हम्ज़ा (رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا) ईमान लाए और फूफियों में से हज़रते सफ़िय्या (رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا) ने इस्लाम क़बूल किया।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 510 मुलख़्ख़सन)

﴾25﴿ हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का आस्ताना वोह आस्ताना है जिस के आदाब ख़ुद रब तआला सिखाता है और उस आस्ताने शरीफ़ के आदाब फ़रिश्ते, जिन्न, इन्सान, जानवर ग़रज़ सारी ख़ुदाई बजा लाती है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 511)

﴾26﴿ हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की अज़्वाजे पाक अगर्चे मुसलमानों की माएं हैं मगर पर्दा वाजिब, लिहाज़ा पीर की, उस्ताद की बीवी मुरीद और शागिर्द से पर्दा करे। जब उन पाकबाज़ बीवियों को उन पाकीज़ा जमाअते सहाबा (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) से पर्दा कराया गया तो अब मुसलमानों को बड़ी एहतियात करनी चाहिये।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 830)

﴾27﴿ हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) हमेशा ह़यातुन्नबी (यानी ज़िन्दा) हैं और सब का दुरूदो सलाम सुनते हैं, जवाब देते हैं क्यूंकि जो जवाब न दे सके उसे सलाम करना मन्अ है जैसे नमाज़ी और सोने वाला। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 512)

﴾28﴿ फ़रिश्तों की मुख़्तलिफ़ ड्यूटियां इन्सान की पैदाइश के बाद लगीं इस से पहले करोड़ों साल तक उन के दो ही मश्ग़ले थे। सुजूद और दुरूद।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 512)

﴾29﴿ दुरूद शरीफ़ उम्र में एक बार पढ़ना फ़र्ज़ है। नमाज़ में अत्तह़िय्यात के बाद पढ़ना सुननत है और हमेशा पढ़ना मुसतह़ब है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 512, मुलतक़तन)

﴾30﴿ दुरूद शरीफ़ मुकम्मल वोह है जिस में सलातो सलाम दोनों हों। नमाज़ में दुरूदे इब्राहीमी में सलाम नहीं है क्यूंकि सलाम अत्तह़िय्यात में हो चुका और नमाज़ सारी एक ही मजलिस के हुक्म में है। हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने दुरूद की जो तालीम दुरूदे इब्राहीमी से फ़रमाई वहां नमाज़ की ह़ालत में दुरूद मुराद है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 512, मुलतक़तन)

﴾31﴿ जिस काम से हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को ईज़ा पहुंचे ह़राम है अगर्चे ब ज़ाहिर वोह इबादत ही हो। लिहाज़ा अगर हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को किसी वक़्त किसी नमाज़ से ईज़ा पहुंचे तो वोह नमाज़ ह़राम है और अगर किसी के नमाज़ तर्क करने से राह़त पहुंचे वोह नमाज़ छोड़ना फ़र्ज़ है इसी लिये ह़ज़रते अली (رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ) का ख़ैबर में नमाज़े असर हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की नींद पर क़ुरबान करना आला इबादत क़रार पाया। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 512)

﴾32﴿ हमेशा ग़ुस्ल तन्हाई व पर्दे में करना चाहिये येह सुन्नते अम्बिया है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 513)

﴾33﴿ ज़बान ठीक रखना, झूट, ग़ीबत, चुग़ली, गाली गलोच से इसे बचाना बड़ा अहम है क्यूंकि रब तआला ने तक़्वा के बाद ज़बान सम्भालने का ख़ुसूसिय्यत से ज़िक्र किया है वरना येह भी तक़्वा में आ चुका था। ज़बान की हिफ़ाज़त तमाम भलाइयों की अस्ल है इसी लिये तमाम कामों के लिये दो उज़्व हैं और बोलने के लिये एक ज़बान वोह भी होंटों के फाटक में बन्द और 32 दांतों के पहरे में मुक़य्यद ताकि पता लगे कि ज़बान को बे क़ैद न रखो। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 831)

﴾34﴿ फ़राइज़ की पाबन्दी से सुन्नतों की तौफ़ीक़ मिलती है सुन्नतों की पाबन्दी से मुस्तहब्बात अदा करने और गुनाहों से बचने की तौफ़ीक़ नसीब होती है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 831)

"सूरतुस्सबा" से ह़ासिल होने वाली 5 ख़ूबसूरत बातें

﴾1﴿ ह़ज़रते सुलैमान (عَلَيْهِ السَّلَام) के साथ एक फ़रिश्ता आतशीं गुर्ज़ (यानी आग का हथोड़ा) लिये रहता था जो सरकशी करने वाले जिन को मारता था।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 516)

﴾2﴿ अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के अज्साम वफ़ात के बाद गलने और मिटने से मह़फ़ूज़ हैं। देखो दीमक ने ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की लाठी खाई मगर जिस्म शरीफ़ में फ़र्क़ न आया। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 831)

﴾3﴿ लोग दुन्या में आए हैं ह़ुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) भेजे गए हैं लिहाज़ा हम अपने ख़ुद ज़िम्मेदार हैं और ह़ुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का रब ज़िम्मेदार है जैसे किसी जगह ख़ुद जाना और ह़ुकूमत का सफ़ीर बन कर जाना।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 518)

﴾4﴿ (क़ियामत में) गले में त़ौक़ होना काफ़िर की अलामत होगी, गला ख़ाली होना मोमिन की पहचान। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 519)

﴾5﴿ अक्सर मालदार ही अम्बिया की मुख़ालफ़त करते हैं और फ़ुक़रा उन की इत्तिबाअ, येह क़ानून क़ियामत तक रहेगा कि सरदार, मालदार गुनाहों में पेश पेश जब कि फ़ुक़रा नेकियों में आगे, اِلَّا ماشاءَ الله । (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 519)

"सूरतुल फ़ातिर" से हासिल हने वाली 15 ख़ूबसूरत बातें

﴾1﴿ ग़ुरूर शैतान का नाम है उस के माना हैं : फ़रेबी, धोके बाज़। सूफ़िया फ़रमाते हैं : जो माल, औलाद, हुकूमत, इज़्ज़त रब से बाग़ी बना दे वोह ग़ुरूर है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 523)

﴾2﴿ सूफ़िया फ़रमाते हैं कि रब ने हमारी वज्ह से हमारे दुश्मन शैतान को हमारे घर यानी जन्नत से निकाला तो हम को भी चाहिये कि शैतान को ख़ुदा के घर यानी अपने दिल से निकालें। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 523)

﴾3﴿ मर्द को मोती वग़ैरा पहनना जाइज़ है सोना चांदी पहनना हराम है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 524)

﴾4﴿ हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का ईमान बिश्शहादत (यानी छुपी चीज़ों को देख कर ईमान लाना) कमाल है कि हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने तमाम आलमे ग़ैब का मुशाहदा फ़रमाया ख़ुसूसन मेराज में। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 525)

﴾5﴿ हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) रब तआला के ऐसे महबूब हैं कि हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के दिल को रब तआला ख़ुश रखता है और तस्कीन देता है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 833)

﴾6﴿ पहाड़ों में कहीं सफ़ेद पथ्थर के रास्ते हैं कहीं सियाह के और कहीं सुर्ख़ पथ्थर के, येह भी **अल्लाह** तआला की क़ुदरत के नमूने हैं ऐसे ही दुन्या में शरीअतो तरीक़त के रंग बरंगे रास्ते हैं हनफ़ी, शाफ़ेई, मालिकी, हम्बली और क़ादिरी, चिश्ती, नक़्शबन्दी, सोहरवर्दी येह ख़ुदा रसी (यानी **अल्लाह** पाक की बारगाह तक पहुंचने) के मुख़्तलिफ़ रास्ते हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 526)

﴾7﴿ अपने आमाल की क़बूलिय्यत का यक़ीन न होना चाहिये बल्कि मर्दूदिय्यत का अन्देशा (यानी ना मक़्बूल होने का ख़ौफ़) और क़बूल की उम्मीद चाहिये।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 526)

﴾8﴿ क़ुरआन की ख़िदमत बड़ी नेमत है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 833)

﴾9﴿ जन्नत में कोई इबादत न होगी मगर ह़म्दे इलाही और नाते मुस्त़फ़ा वहां भी होगी। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 527)

﴾10﴿ गुनाहगार मुसलमान दोज़ख़ में पहुंच कर मर जाएंगे और जिस्म कोइले बन जाएंगे, फिर सज़ा की मुद्दत पूरी होने के बाद उन्हें जन्नत के पास रख कर वहां का पानी दिया जाएगा जिन से वोह ऐसे उगेंगे जैसे दाने पानी से।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 527)

﴾11﴿ **अल्लाह** तआला कुफ़्फ़ार के लिये ह़लीम है, मोमिनों के लिये ग़फ़ूर, ह़लीम वोह है जो सज़ा जल्द न दे, ग़फ़ूर वोह जो सज़ा बिल्कुल न दे मुआफ़ी दे दे।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 528)

﴾12﴿ तकब्बुर व ग़ुरूर ऐसी बुरी बीमारी है कि इस की वज्ह से इन्सान नबी की पैरवी से मह़रूम रहता है, बारगाहे अम्बिया में इज्ज़ो इन्किसारी ईमान का ज़रीआ है। कुफ़्फ़ारे मक्का के कुफ़्र की वज्ह येही हुई कि उन्हों ने अपने को नबी से बढ़ कर जाना। वोह बोले : हम मालदार हैं और वोह (यानी अम्बिया عَلَيۡهِمُ السَّلَام) मिस्कीन। अक्सर कुफ़्फ़ार ने अपने को नबी की मिस्ल बशर कहा।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 528)

﴾13﴿ यादगारों का सबूत सिर्फ़ शोहरत से हो जाता है उस के लिये ऐनी गवाह या आयत व ह़दीस की ज़रूरत नहीं। कुफ़्फ़ार में मशहूर था कि येह बस्ती फ़ुलां काफ़िर क़ौम की है येही सबूत क़ुरआने करीम ने काफ़ी माना, लिहाज़ा तबर्रुकात के सबूत के लिये आयत ज़रूरी नहीं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 834)

﴾14﴿ आफ़्रीनिश (यानी मख़्लूक़ की पैदाइश) में अस्ल मक़्सूद इन्सान है बाक़ी मख़्लूक़ ताबेअ। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 529)

﴾15﴿ इन्सानों के गुनाह की नुहूसत का वबाल दूसरी मख़्लूक़ पर भी पड़ता है। दरिया व हवा के जानवर भी मुसीबत में मुब्तला हो जाते हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 529)

"सूरए یٰسٓ" से ह़ासिल होने वाली 09 ख़ूबसूरत बातें

﴾1﴿ ह़बीबुल्लाह किताबुल्लाह से अहम हैं इस लिये क़ुरआन का देखने पढ़ने वाला क़ारी होता है और हुज़ूर का चेहरा देखने वाला सह़ाबी बशर्ते कि सिद्दीक़ी निगाह से देखे। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 529)

﴾2﴿ जन्नत मिलने का बड़ा सबब ख़ौफ़े इलाही और हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की मह़ब्बत के साथ आप की इत्तिबाअ है, रब तआला नसीब फ़रमाए। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 530)

﴾3﴿ नबी के सह़ाबा का इन्कार नबी का इन्कार है और नबी का इन्कार रब का इन्कार। अन्ताकिया वालों ने ईसा عَلَیْہِ السَّلَام के सह़ाबा का इन्कार किया और हलाक हुए। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 834)

﴾4﴿ रब्बुल आलमीन ने अपनी मख़्लूक़ में जोड़े रखे हैं मीठा कड़वा, ठन्डा गर्म, अच्छा बुरा वग़ैरा सब जोड़े हैं, बे जोड़ रब की ज़ात है। बाज़ दरख़्तों में नर व मादा होते हैं जो पहचाने भी जाते हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 532 मुल्तक़तन)

﴾5﴿ रब तआला उठाने से पहले हर मय्यित के अज्ज़ाए असलिय्या वहां ही जम्अ फ़रमा देगा जहां वोह दफ़्न हुवा या जलाया गया या जहां उसे शेर वग़ैरा या मछली ने खाया। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 533)

﴾6﴿ क़ियामत में सब से पहले पैग़म्बरों की नातख़्वानी होगी जो क़ब्रों से उठते ही सब लोग सुनेंगे, फिर शफ़ीअ (यानी शफ़ाअत करने वाले प्यारे और आख़िरी नबी

(صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की तलाश व जुस्तजू होगी। इस से वोह लोग इब्रत पकड़ें जो आज नातख़्वानी या वसीला या बुज़ुर्गों की इम्दाद का इन्कार करते हैं।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 533)

﴾7﴿ (जन्नत में मिलने वाली) हूरें लौंडियों की हैसिय्यत से न होंगी बल्कि बीवी की हैसिय्यत से (होंगी)। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 835)

﴾8﴿ काफ़िर की ज़बान वहां (यानी क़ियामत में) भी झूट से बाज़ न आएगी। बाक़ी आज़ा सच सच अर्ज़ कर देंगे। उस की ज़बान बड़ी मुजरिम है लबों पर मोहर दाइमी न होगी, आज़ा की गवाही ले कर ज़बान की मोहर तोड़ दी जाएगी, इस लिये वोह दोज़ख़ में पहुंच कर शोर मचाएंगे। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 534)

﴾9﴿ अरब में दो दरख़्त पाए जाते हैं मर्ख़ और अफ़ार, मर्ख़ नर है अफ़ार मादा। जब इन की हरी शाख़ें एक दूसरे से रगड़ी जाएं तो इन से आग निकलती है हालांकि इन में इतनी तरी होती है कि इन से पानी टपकता है। देखो रब की शान कि पानी और आग एक ही जगह जम्अ फ़रमा दिये, कीकर का दरख़्त गीला भी जलता है, रेल का कोइला भीग कर ख़ूब जलता है ऐसे ही रब ने बशरिय्यत के सब्ज़ दरख़्त में महब्बत व इश्क़ की आग वदीअत (अमानत) रखी है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 535)

"सूरतुस्साफ़्फ़ात" से हासिल होने वाली 17 ख़ूबसूरत बातें

﴾1﴿ मजबूरी की हालत में लफ़्ज़े कुफ़्र ज़बान से निकालने की इजाज़त है न कि दिल से काफ़िर हो जाने की। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 537)

﴾2﴿ जन्नत में ग़िज़ा न दी जाएगी, मेवे अता होंगे, ग़िज़ा भूक दफ़्अ करने के लिये खाई जाती है और मेवे सिर्फ़ लज़्ज़त के लिये वहां भूक न होगी लिहाज़ा गन्दुम वग़ैरा नहीं अंगूर वग़ैरा होंगे। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 538)

﴾3﴿ जन्नती लोग हल्क़े बना कर बैठा करेंगे दुन्या में ज़िक्र के हल्क़े गोया जन्नतियों के हल्क़े हैं मगर नमाज़ें सफ़ें बना कर पढ़ो ताकि फ़रिश्तों की सफ़ों के मुशाबेह हो जाओ। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 538)

﴾4﴿ जन्नत में ख़ातिर तवाज़ोअ मेहमानों की सी होगी लेकिन जन्नती लोग अपनी चीज़ों के मालिक होंगे उन्हें मेहमान फ़रमाना ख़ातिर तवाज़ोअ के लिहाज़ से है न कि मालिक होने के एतिबार से। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 539)

﴾5﴿ नूह عَلَيْهِ السَّلَام का लक़ब आदमे सानी है, सारी दुन्या में आप के तीन लड़कों साम, हाम और याफ़िस की औलाद है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 836)

﴾6﴿ बादे वफ़ात ज़िक्रे ख़ैर दुन्या में रहना **अल्लाह** की रहमत है। लोग अपना ज़िक्रे ख़ैर बाक़ी रखने के लिये बड़ी कोशिशें करते हैं। मसाजिद, कुंएं, पुल, मुसाफ़िर ख़ाना वग़ैरा इसी लिये लोग बनाते हैं, किताबें लिखी जाती हैं इसी लिये रब तआला फ़क़ीर की येह दीनी तस्नीफ़ात क़बूल करे और उस को तोशए आख़िरत बनाए। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 836)

﴾7﴿ हज़रते इब्राहीम (عَلَيْهِ السَّلَام) नूह عَلَيْهِ السَّلَام से दो हज़ार छे सौ चालीस बरस बाद हुए और इतने दराज़ ज़माने में सिर्फ़ दो रसूल तशरीफ़ लाए हज़रते हूद व सालेह عَلَيْهِمَا السَّلَام। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 540)

﴾8﴿ इल्मे नुजूम बरहक़ है इस से नमाज़ रोज़े के औक़ात की जन्तरियां बनाना हक़ है मगर ग़ैबी ख़बरें लेना हराम है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 540)

﴾9﴿ اِنْ شَآءَ الله कह लेना सुन्नते अम्बिया है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 541)

﴾10﴿ नेकी का अज़्म बिल जज़्म (यानी नेकी करने का पुख़्ता इरादा करना भी) नेकी है क्यूंकि हज़रते इब्राहीम (عَلَيْهِ السَّلَام) की आमदगिये ज़ब्ह को ज़ब्ह क़रार दिया गया। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 541)

﴾11﴿ हज़रते जिब्रील (عَلَيْهِ السَّلَام) ने दुम्बा लाते वक़्त पुकारा : اَللّٰهُ اَكْبَر। हज़रते इब्राहीम (عَلَيْهِ السَّلَام) ने दुम्बा देख कर फ़रमाया : لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَر। हज़रते इस्माईल (عَلَيْهِ السَّلَام) ने हाथ खुलने और इम्तिहान की काम्याबी पर फ़रमाया : وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ। इन का मजमूआ आज तक्बीरे तशरीक़ है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 541)

﴾12﴿ ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام तक सारे नबी ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ السَّلَام की औलाद में हुए और सिर्फ़ हमारे हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام की औलाद में हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 541)

﴾13﴿ ह़ज़रते ख़िज़्र समुन्दर पर और ह़ज़रते इल्यास ख़ुश्की पर मुन्तज़िम हैं। क़रीबे क़ियामत वफ़ात पाएंगे, बाज़ बुज़ुर्गों से उन की मुलाक़ात भी हुई।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 542)

﴾14﴿ बाज़ उश्शाक़ कहते हैं कि कद्दू बड़ी मुबारक तरकारी होती है। ह़ज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام ने इस के नीचे आराम फ़रमाया। हमारे हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को कद्दू बहुत मरग़ूब (यानी पसन्द) था। सह़ाबए किराम भी उसे पसन्द फ़रमाते थे।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 543)

﴾15﴿ हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की निगाह से अज़ाबे क़ब्रो अज़ाबे दोज़ख़ छुपा हुवा नहीं। हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के ख़च्चर ने अज़ाबे क़ब्र देखा जिस से वोह बिदका। जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में है :

ह़ज़रते ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللهُ عَنْه बयान करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बनू नज्जार के बाग़ में अपने ख़च्चर पर सुवार थे और हम भी आप के साथ थे कि अचानक ख़च्चर बिदक्ने लगा क़रीब था कि आप उस की पुश्त से नीचे तशरीफ़ ले आते, देखा गया तो वहां चार, पांच या छे क़ब्रें थीं, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि उन क़ब्र वालों को कौन पहचानता है ? एक शख़्स ने कहा : मैं पहचानता हूं। इरशाद फ़रमाया : येह कब फ़ौत हुए ? उस ने बताया कि येह शिर्क की ह़ालत में मरे हैं। इरशाद फ़रमाया : बेशक येह उम्मत अपनी क़ब्रों में आज़्माई जाएगी अगर येह ख़ौफ़ न होता कि तुम मुर्दे दफ़्नाना छोड़ दोगे तो मैं **अल्लाह** पाक से दुआ करता कि येह अज़ाबे क़ब्र जो मैं सुन रहा हूं तुम्हें भी सुनाए।

(مسلم، ص1175، حديث:2867) (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 544 बि तग़यीरिन)

﴾16﴿ जो सुब्हान या तस्बीह़ (यानी سُبْحٰنَ الله वग़ैरा) का विर्द करे, اِنْ شَآءَ الله उस के उयूब फ़ना हो जाएंगे और नेक अख़्लाक़ नसीब होंगे क्यूंकि रब के नाम का असर विर्द करने वाले पर होता है जैसे शाफ़ी के विर्द से शिफ़ा और ग़फ़ूर के विर्द से मग़्फ़िरत नसीब होती है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 544)

﴾17﴿ अपना वाज़ व कलाम ख़ुदा की ह़म्द पर ख़त्म करना चाहिये। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 544)

“सूरए ص” से ह़ासिल होने वाली 09 ख़ूबसूरत बातें

﴾1﴿ ज़ियादा आराम व राह़त भी बन्दे को सरकश (यानी ना फ़रमान) कर देती है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 545)

﴾2﴿ नबी की हुकूमत बे अक़्ल और बेजान चीज़ों पर भी होती है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 546)

﴾3﴿ ह़ाकिम को चाहिये कि फ़ैसले के वक़्त मख़्लूक़ की उल्फ़त (यानी मह़ब्बत) से दिल ख़ाली करे मह़ज़ रब को राज़ी करने के लिये फ़ैसला करे। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 547)

﴾4﴿ दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की उम्र शरीफ़ सौ बरस हुई। आप की वफ़ात अचानक हुई, ब वकते विसाल आप सज्दे में थे। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 547)

﴾5﴿ अचानक मौत मक़्बूलीन के लिये रह़मत है जो हर वक़्त तय्यार रहते हैं, ग़ाफ़िलों के लिये ज़ह़मत कि वोह आख़िरत की तय्यारी नहीं करते। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 837)

﴾6﴿ अम्बियाए किराम (عَلَيْهِمُ السَّلَام) मुस्तह़ब काम के भूल जाने पर भी मुआफ़ी के ख़्वास्तगार (यानी मुआफ़ी त़लब करने वाले) होते हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 838)

﴾7﴿ किसी पैग़म्बर पर ज़कात फ़र्ज़ नहीं हुई, हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का फ़रमाना : "وَاَوْصٰنِیْ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ" (तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मुझे नमाज़ो ज़कात की ताकीद फ़रमाई।) (پ16، مریم:31) में ज़कात से मुराद तहारते नफ़्स है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 548)

﴾8﴿ बाज़ खानों में बीमार कर देने की तासीर है, **अल्लाह** के मक़्बूल बन्दों में ब अताए इलाही शिफ़ा दे देने की भी ताक़त है, ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि मैं अन्धे कोढ़ियों को शिफ़ा देता हूं रब के हुक्म से, उन की ताक़त नारी मख़्लूक़ (यानी जिन्नात) की ताक़तों से ज़ियादा है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 548)

﴾9﴿ (जन्नत में) दुन्या की बीवीयां हूरों से ज़ियादा हसीना होंगी और सब तीस साल की, हमेशा येही उम्र रहेगी। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 549)

फ़ेहरिस्त

उन्वान	सफ़्हा नम्बर	उन्वान	सफ़्हा नम्बर
पहले साहिबे किताब नबी मूसा عَلَيْهِ السَّلَام हैं	02	हम्दे इलाही और नाते मुस्तफ़ा जन्नत में भी होगी	10
हुज़ूर का हर काम वह़ी की इत्तिबाअ है	03	हबीबुल्लाह किताबुल्लाह से अहम हैं	11
हुज़ूर हमारे सब से ज़ियादा मालिक हैं	03	इल्मे नुजूम से ग़ैबी ख़बरें लेना हराम है	13
हुज़ूर रब तआला के नाइबे आज़म और मुख़्तारे मुतलक़ हैं	04	नूह عَلَيْهِ السَّلَام का लक़ब आदमे सानी है	13
हुज़ूर की अज़्वाज व औलाद गुनाहों से पाक हैं	05	हमारे हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) हज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام की औलाद में हैं	14
लोग दुन्या में आए हैं हुज़ूर भेजे गए	08	अचानक मौत मक़्बूलीन के लिये रह़मत है	15
हुज़ूर ने तमाम आलमे ग़ैब का मुशाहदा फ़रमाया	09	किसी पैग़म्बर पर ज़कात फ़र्ज़ नहीं हुई	16

"तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान" के मदनी फूलों पर काम का अन्दाज़

"तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान" से मदनी फूलों के रसाइल तय्यार करने के लिये नईमी कुतुब ख़ाने का मतबूआ नुस्ख़ा, नम्बर (N163) पर काम किया गया है। नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नाम और लक़ब शरीफ़ के साथ दुरूदे पाक, अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के साथ सलाम, सहाबए किराम (رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم) और औलियाए किराम (رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِم) के ज़िक्र के वक़्त तरज़्ज़ी व तरहीम (यानी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه और رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه) का इज़ाफ़ा किया गया है। हर मदनी फूल के बाद हवाला दिया गया है। मुश्किल अल्फ़ाज़ के माना ब्रेकेट में पेश किये गए हैं और बाज़ मक़ामात पर मुश्किल अल्फ़ाज़ के तलफ़्फ़ुज़ और एराब का इज़ाफ़ा किया गया है। ज़रूरतन अंग्रेज़ी अल्फ़ाज़ भी शामिल किये गए हैं। पुरानी उर्दू के बाज़ अल्फ़ाज़ या जुम्लों को मुरव्वजा (यानी आज कल बोली जाने वाली) उर्दू के एतिबार से कुछ आसान करने की कोशिश की गई है। चन्द मक़ामात पर मुश्किल मदनी फूलों को ख़ुलासतन बयान किया गया है, कुछ मक़ामात पर अक़्वाल की हेडिंग्ज़ दी गई हैं ताकि पढ़ने वालों के लिये अक़्वाल की अहमिय्यत मज़ीद बढ़े। मुफ़्ती साहिब رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने कई मक़ामात पर तफ़्सीरी निकात बयान करते हुए ज़िम्नन अहादीसे मुबारका बयान की हैं, पढ़ने वालों के ज़ौक़ के लिये उन अहादीसे मुबारका की तख़रीज भी की गई है चन्द मवाक़ेअ पर मौज़ूअ की मुनासबत से पढ़ने वालों को नेकियों की तरग़ीब दिलाने वग़ैरा के इफ़ादात शोबा "हफ़्तावार रिसाला मुतालआ" की तरफ़ से शामिल किये गए हैं।

सिर्फ़ ऐसे निकात (मदनी फूलों) को बाक़ी रखा गया है जो जुदागाना तौर पर एक क़ौल हैं। ऐसे अक़्वाल जिन को समझने के लिये आयते मुबारका की ज़रूरत हो उन्हें रिसाले में शामिल न करने की कोशिश की गई है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

अगले हफ़्ते का रिसाला

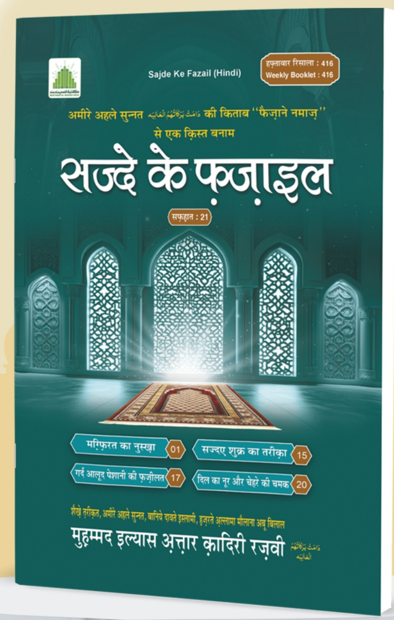

DAWATEISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025